E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2022; 4(2): 08-11
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 07-04-2022
Accepted: 012-05-2022

विकास सिंह गौतम
शोध छात्र, सेंटर फॉर फिलॉसोफी, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

अक्षरा सिंघई
शोध छात्र, डिपार्टमेंट ऑफ फिलोसोफी, डॉ हरि सिंह गौर यूनिवर्सिटी, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
विकास सिंह गौतम
शोध छात्र, सेंटर फॉर फिलॉसोफी, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

जाति का विकास और विनाश : अंबेडकर की दृष्टि

विकास सिंह गौतम, अक्षरा सिंघई

सारांश
इस लेख में बी आर आंबेडकर के भाषण "एनहिलेशन ऑफ कास्ट" और उनके लेख "कास्टस इन इंडिया: देयर मैकेनिज्म, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट" के माध्यम से जाति के मूल कारण पर प्रकाश डाला है साथ ही समाज में जाति की वर्तमान प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डालने की कोशिश की गयी है। जाति की प्रासंगिकता को खत्म करने और हिन्दू धर्म में बाबा साहब आंबेडकर के विचारों पर भी चर्चा की गयी है।

मूल शब्द : जाति, सजातीय विवाह, अंतर्जातीय विवाह, इंडोगमी, एक्सोगमी, अंबेडकर

प्रस्तावना
वर्तमान समाज में जाति के वर्चस्व को नकारा नहीं जा सकता है। समकालीन समाज में हमें देखने को मिलता है कि जाति का जो एक सामाजिक ढांचा है वह अभी भी बना हुआ है। आजादी के 70 साल बाद भी यह जाति यथा स्थान बनी हुई है। इसमें आंशिक परिवर्तन देखने को मिला है यद्यपि ऐसा नहीं है की जाति का वर्चस्व टूटा है लेकिन यह सिर्फ अपवाद के रूप में है। वर्तमान समाज में जब हम देखते हैं कि आए दिन अखबार में हमें जाति उत्पीड़न और जातीय भेदभाव की घटनाएं पढ़ने को मिल जाती हैं और साथ ही अंतर्जातीय विवाह किए गए युगलों के साथ भी भेदभाव और हिंसक घटनाएं आए दिन अखबारों में हमें पढ़ने को मिलती हैं। लेकिन ऐसे क्या कारण है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी आए दिन यह घटनाएं समाज में बनी हुई है। इस लेख में जाति के बने रहने के मूल बिंदु पर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के भाषण "एनहिलेशन ऑफ कास्ट" और "कास्टस इन इंडिया : देयर मैकेनिज्म,जेनेसिस एंड डेवलपमेंट" लेखों के माध्यम से जाति के बने रहने के मूल कारण पर प्रकाश डालेंगे . साथ ही यह भी प्रकाश डालेंगे कि किस तरीके से विभिन्न समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिकों ने यह माना है की औद्योगिकरण और शहरीकरण के बावजूद आधुनिक वर्तमान समाज में किस तरीके से जाति की सचेतता लोगों के बीच में बनी हुई है और विभिन्न संगठनों के माध्यम से यह जाति विस्तार कर रही है।

जाति का मूल कारण : बाबा साहब आंबेडकर की दृष्टि

जाति की उत्पत्ति के संदर्भ में भीमराव अंबेडकर "कास्टस इन इंडिया : देयर मैकेनिज्म,जेनेसिस एंड डेवलपमेंट" में कहते हैं कि, "जाति की उत्पत्ति सजातीय विवाह के तंत्र की उत्पत्ति है।" सजातीय विवाह डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने सजातीय विवाह को जाति के अस्तित्व का और उसके विकास का मूलाधार और कारण माना है । वर्तमान समाज में माता-पिता द्वारा तय किए गए वर या वधू से विवाह का चलन प्रचलित है। ऐसा माना जाता है कि यह प्रथा सिर्फ गांव तक सीमित है लेकिन वास्तविकता यह है कि शहरी क्षेत्रों में भी अधिकतर माता पिता अपनी जाति के वर वधु से ही विवाह करते हैं । डॉक्टर अंबेडकर के अनुसार सजातीय विवाह के कारण ही जाति विकसित होती है और आगे बढ़ती है । माता पिता द्वारा तय किए गए वर वधु को ही अधिकतर लोग मानते हैं यही कारण है की मेट्रोमोनियल विज्ञापनों में मेट्रोमोनियल वेबसाइट के प्रोफाइल में 99% लोग अपनी जाति के वर वधू को ही प्राथमिकता देते हैं और स्पष्ट रूप से प्रोफाइल में लिख देते हैं की हमें अमुक जाति अथवा वर की वधू ही चाहिए । अन्य लोग आवेदन ना करें यूं तो सजातीय विवाह के कारण जाति अपने स्थान पर बनी हुई है साथ ही जाति आधारित संगठनों ने भी जातीय चेतना को और मजबूत किया है। जाति आधारित संगठन युवाओं में जातीय चेतना का विकास करते हैं जिससे युवाओं में सजातीय लगाओ बढ़ जाता है इसलिए जातिगत संगठनों के द्वारा भी लोगों में जातीय सचेतता और चेतना बनी हुई है।

आजादी के बाद औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप शहरीकरण और आधुनिकीकरण भी जाति व्यवस्था पर कुछ खास असर नहीं डाल पाए जैसा कि उम्मीद लगाई जा रही थी कि आजादी के बाद आधुनिकीकरण और शहरीकरण के फलस्वरूप जातिगत चेतना लोगों के अंदर कमजोर पड़ेगी और यह व्यवस्था धूमिल होगी लेकिन वास्तविकता में ऐसा नहीं हुआ।

अगर हम यह माने की शिक्षा के विकास ने जातीय व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिए हैं तो यह बढ़ती शिक्षा भी जाति व्यवस्था पर कुछ खास असर नहीं डालती है क्योंकि जातीय स्वरूप बढ़ते शहरीकरण के साथ बदला है जिसका मुख्य कारण सजातीय विवाह रहा है।

अहूजा जाति के भविष्य के विश्लेषण के संदर्भ में कहते हैं कि, "हालांकि जाति व्यवस्था ने अपनी कुछ खूबियों को संरक्षित किया है लेकिन ऐसा कोई सूत्र नहीं दिखता जिससे यह पता लग जाए कि जाति व्यवस्था अपनी पकड़ खो रही है बल्कि यहां पर जाति व्यवस्था की पकड़ विभिन्न उपजातियों के विस्तार के फल स्वरुप बढ़ती दिखाई दे रही है साथ ही विभिन्न जातीय संगठनों के बनने के फल स्वरुप जाति और भी मजबूत होती दिखाई दे रही है भले ही यह संगठन राजनीतिक शैक्षिक रोजगार और आर्थिक मौके को बढ़ाने या लाभ के लिए बने हो।"

जाति की वर्तमान स्थिति

अधिकतर समाजसेवी समाजशास्त्री आहूजा, सिन्हा बढ़ते हुए जातिवाद पर एकमत हैं। वह कहते हैं कि, "जातिवाद लोकतंत्र, राजनीतिक एकता, सामाजिक विकास और सामाजिक न्याय पर खतरा है। बढ़ता जातिवाद जातीय हिंसा, असहिष्णुता और तनाव को बढ़ाता है। वर्तमान में हमें जातीय हिंसा की खबरें आए दिन विभिन्न समाचार पत्रों में पढ़ने को मिल जाती हैं । बढ़ते जातीय संगठन भी अंतरजातीय विवाह का विरोध करते हैं। रुथ (1990) स्पेशल मैरिज एक्ट के ऊपर लिखे अपने आलेखों में लिखते हैं कि, "जातीय समूहों ने अंतरजातीय विवाह को रोकने के लिए अनेक प्रयास किये हैं । ये लोग अंतरजातीय विवाह करने वाले लोगो को विभिन्न प्रकार के प्रयोजनों द्वारा परेशान करते थे। यही कारण है कि वर्ष 1989 में 80 लाख जनसंख्या वाले देश की राजधानी में सिर्फ 444 शादिया स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत हुयी।

सिन्हा (1960) के अनुसार जातीय चेतना न सिर्फ राजनितिक व् आर्थिकं क्षेत्र में फैली है बल्कि यह चेतना विश्वविद्यालय के छात्रों में भी फ़ैल गयी है। पाठक (1994) की रिपोर्ट के अनुसार एमएआरजी (MARG) के सर्वे द्वारा निम्न तथ्य ज्ञात हुए। यह सर्वे 365 कॉलेजों और भारत के आठ बड़े शहरो में कराया गया जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय भी है। यह सर्वे उल्लिखित करता है कि जाति और समुदाय आधारित समूहों और संगठनों का विकास बड़े विश्विद्यालय परिसरो में हो चुका है। घुरिये (1969) कहते हैं कि सजातीय चेतना दूसरी जातियों के प्रति विरोध पैदा करती है जो राष्ट्रीय चेतना के लिए उचित नहीं है।

जाति का विनाश : आंबेडकर की दृष्टि

अब हम बात करते हैं उन बिन्दुओ की जिन्हे बाबा साहब भीम राव अंबडेकर ने अपने भाषण "एनहिलेशन ऑफ़ कास्ट " में कहा। इसमें बाबा साहब कहते हैं कि "जाति सिर्फ कार्य का विभाजन नहीं है बल्कि यह कार्य करने वाले लोगो का विभाजन भी है। बाबा साहब ने बताया

की किस प्रकार कार्य का विभाजन आगे चलकर जाति आधारित और जन्म के आधार पर हो गया अर्थात एक समूह या वर्ग/जाति के लोग ही अमुक कार्य करेंगे। उदाहरण के तौर पर पुजारी होने का चयन जाति आधारित हो गया। यह चलन प्रारम्भ में कर्म के आधार पर था जो आगे चलकर सजातीय विवाह के कारण जन्म के आधार पर प्रचलित हो गया। बाबा साहब ने जाति के विनाश के सन्दर्भ में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए और हिन्दू धर्म सुधार के लिए भी काफी महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सबसे पहले जाति के विनाश के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण बिन्दुओ पर चर्चा करते हैं।

उनके अनुसार एक आदर्श समाज वह समाज है जो समानता, स्वतंत्रता और बंधुता के विचारों पर आधारित है उनके अनुसार जाति व्यवस्था एक आदर्श समाज के निर्माण में घातक है तथा सिर्फ जाति व्यवस्था ही हिंदू को एक संगठित समाज या राष्ट्र बनने से रोकता है। जाति भावना की वजह से हिंदू एक संगठन में नहीं रह पाते हैं। हिंदुओं का जातियों में विभाजन एवं उनका सहनशील होना भारत की वर्षों की ग़ुलामी का एक कारण है। इसलिए वे सदैव हिंदुओ के अंदर जाति व्यवस्था और अत्याधिक सहिष्णुता के खिलाफ थे।अम्बेडकर ने अपने जीवन के पहले प्रत्यक्ष संघर्ष की शुरुवत मंदिर आंदोलन से ही प्रारम्भ की थी, अपनी प्रसिद्ध पुस्तक जाति प्रथा का विनाश (Annihilation of Caste)" में हिंदू धर्म में सुधार एवं उनके संगठित होने हेतु निम्नलिखित उपाय बताये है- पहला, उप जातियों को खत्म करे तथा आपस में भोजन और अंतरजातीय विवाह करें दूसरा शास्त्रों की पवित्रता को खत्म कीजिए या फिर शास्त्रों की उपयोगिता को जनता के सामने लेकर आए क्योंकि यह फर्क नहीं पड़ता कि शास्त्रों में क्या लिखा है, फर्क पड़ता है की लोगों ने शास्त्रों को कैसे समझा । उदाहरण के तौर पर महात्मा बुध, गुरु नानक ने हिंदू धर्म के सकारात्मक तर्को, विश्वासों का इस्तेमाल किया। इससे इन्होंने हिंदू धर्म के अंदर ही एक समतावादी तर्कपूर्ण और संगठित समाज का निर्माण करने का प्रयास किया। तीसरा, अंबेडकर के लिए एक आदर्श धर्म की कुछ विशेषताएं हैं पहले एक धार्मिक किताब होनी चाहिए दूसरी पुजारी के पद को परीक्षा होनी चाहिए वह डिग्री आवश्यक हो तीसरा पुजारी को अन्य राज्य की सेवा की बराबरी का दर्जा मिले एवं उनकी संख्या निर्धारित की जाए तथा कानून द्वारा मान्यता प्राप्त हो. इनके अलावा बाबा साहेब ने निम्नलिखित सुझाव दिए-

अंतर्जातीय विवाह : जिस प्रकार से बाबा साहब अपने लेख "कास्ट्स इन इंडिया :देयर मैकेनिज्म, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट" में कहते है कि जाति के विकास का महत्वपूर्ण कारण सजातीय विवाह है उसी प्रकार जाति के प्रसार को रोकने के लिए और उसके विनाश के लिए अंतर्जातीय विवाह को अपनाना पड़ेगा। अंतर्जातीय विवाह ही जाति के विनाश के लिए कारगर हथियार साबित होगा। ऐसा माना जाता है कि सजातीय विवाह से रक्त की पवित्रता बनी रहती है जो कि निराधार है। अंतरजातीय विवाह से यह धारणा टूटेगी और जाति का विकास रुकेगा।

सहभोज : बाबा साहब आंबेडकर ने जाति आधारित भेदभाव को खत्म करने के लिए सहभोज का समर्थन किया। सहभोज करने से लोगो में परस्पर बंधुत्व की भावना का विकास होता है और सामाजिक सौहार्द बढ़ता है। वर्तमान समाज में सहभोज करने पर अधिकतर लोगो को आपत्ति नहीं है लेकिन जब बात अंतर्जातीय विवाह की आती है तो यह आपत्ति अधिकतर लोगो में अभी भी है।

पुजारियों की नियुक्ति : बाबा साहब आंबेडकर ने हिन्दू धर्म में सुधार के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए। वो अपने तैयार किये गए भाषण "एनहिलेशन ऑफ़ कास्ट" में कहते हैं कि "पुजारियों की नियुक्ति योग्यता के आधार पर होनी चाहिए न की जन्म के आधार पर। बाबा साहब आंबेडकर का कहना है कि हिन्दू धर्म का पालन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पुजारी बनने का अधिकार होना चाहिए। यह केवल एक जाति तक सीमित नहीं होना चाहिए। इसके अलावा बाबा साहब आंबेडकर ने कहा कि हिन्दुओ की सिर्फ एक धार्मिक पुस्तक होनी चाहिए जो हिन्दू धर्म के सभी लोगों द्वारा स्वीकार्य होनी चाहिए।

सभी हिन्दुओ को पुजारी बनने के लिए योग्य होना चाहिए। कोई व्यक्ति जब तक पुजारी नहीं बनेगा जब तक पुजारी बनने की परीक्षा पास नहीं कर लेता और राज्य उसे पुजारी बनने की सनद नहीं दे देता। जो लोग बिना राज्य द्वारा प्राप्त सनद के बिना पुजारी के पद पर कार्य करेंगे राज्य द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही के भागीदार होंगे। जिस प्रकार डॉक्टर और इंजीनियर बनने की परीक्षा होती है उसी प्रकार पुजारियों की भी परीक्षा आईसीएस के द्वारा हो।

इस प्रकार बाबा साहब आंबेडकर ने सुझाव दिए जिससे जाति नामक व्यवस्था को समाज से खत्म किया जा सके। क्योंकि आंबेडकर जाति को समाज विरोधी मानते थे जैसा कि उन्होंने "एनहिलेशन ऑफ़ कास्ट" में कहा कि "कास्ट इज एन्टीसोशल" अंबेडकर के अनुसार जाति असामाजिक है क्योंकि यह एक जाति के व्यक्ति को दूसरी जाति व्यक्ति के साथ सामाजिक होने से रोकती है जिससे लोगों में परस्पर असहिष्णुता और वैमनस्य पैदा होता है। साथ ही जब लोग एक जाति को श्रेष्ठ मानने लगते हैं तो दूसरी जाति स्वतः सामाजिक दृष्टि से नीचे हो जाती है।

निष्कर्ष

जैसा की हमने जाति के बने रहने के मूल कारण पर प्रकाश डाला और बाबा साहब आंबेडकर के अनुसार जाति के बने रहने की मूल कारणों पर भी चर्चा की। लेकिन यहाँ पर मूल प्रश्न यही उठता है कि वर्तमान उत्तर-आधुनिक समाज में क्या जाति की सार्थकता है और यदि है तो क्यों है हमे इसके मूल कारणों में भी जाना होगा। जाति के महत्व की समाप्ति के लिए जाति के विकास के मूल कारण सजातीय विवाह (इण्डोगमी) से दूरी और अंतर्जातीय विवाह (एक्सोगमी) को बढ़ावा देना होगा। जैसे -जैसे अंतर्जातीय विवाह बढ़ेंगे वैसे- वैसे जाति अपने आप कमज़ोर पड़ेगी। लेकिन एक महत्वपूर्ण बात है कि जाति आधारित राजनीति से भी जाति की सार्थकता बढ़ी है। आज़ादी के बाद जाति का स्थान बढ़ा है और रजनी कोठारी के अनुसार आज़ादी के बाद जातियों का लोकतांत्रिकरण को गया है। अर्थात राजनीति से भी जाति अछूती नहीं रही है। वर्तमान समाज में सजातीय विवाह के चलन में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं आया है। यह हमे मेट्रोमोनिअल्स के विज्ञापनों में देखने को मिलता है जिसमे शिक्षित शहरों के युवां भी अपनी ही जाति के वर-वधू को प्राथमिकता देते हैं जिसकी वजह से जाति का महत्व यथास्थान बना हुआ हुआ। लेकिन जैसे-जैसे इस देश का युवा अंतर्जातीय विवाह को अपनाते जायेगा वैसे -वैसे जाति का महत्व अपने आप नगण्य हो जाएगा।

सन्दर्भ

1. Ambedkar BR. Annihilation of Caste (Jalandhar); c1936.
2. Ambedkar BR. Castes in India: Their Mechanism, Genesis, and Development. Good Press; c2020.
3. Ahuja R. Social Problems in India, Jaipur: Rawat Publications; c1992. p. 241-246.
4. Ghuriye GS. Caste and Race in India, Bombay: Popular Prakashan; c1969.
5. Pathak R. The New Generation, India Today; c1994 January 31. p. 72-87.
6. Sinha D. Caste Dynamics: A Psychological Analysis, The Eastern Anthropologist. 1960;13(4):159-171.
7. Ruth V. The Special Marriage Act, Mamishi. 1990;58:14-21.